AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

çkphu Hkkjrh; lkfgR; esa ty lja{k.k dk çfreku

ORIGINAL ARTICLE

Author
M,- 'kSyUæ ikBd
विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय
पिछोर, जिला शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

'kks/k lkj

Hkkjr esa ty lja{k.k dk cgqr iqjkuk bfrgkl gS ;gka ty lja{k.k fd ,d ewY;oku ikjaifjd lkekftd ,oa lkaL—frd ijaijk gS tks gM+Iik lH;rk ofnd dky ls mÙkj ofnd dky lk{;ksa esa ifjyf{kr gksrh gSA

eq[; 'kCn

ty] ijEijkfRod] èkjksgj] tksgM+] laxg.k] lkfgR;A

प्राचीन भारतीय सभ्यता में जल ही जीवन है का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया है। प्राचीन भारतीय साहित्य से लेकर परंपराओं तक भारतीय ऋषि–मुनियों ने जल और जीवन के तारतम्य को बखूबी समझा और समझाया है। प्राचीन समय में जल को तालाब एवं झीलों में संग्रहित किया जाता था। हमारी सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर मुगल काल तक जल को संग्रहित करने और उसके बेहतर उपयोग के लिए कई तरीके बताए गए हैं। सिंधु घाटी सभ्यता में 3000 से 1500 ई. पूर्व के जलाशय द्वारा वर्षा जल संग्रह के कई प्रमाण प्राप्त हुए हैं। भारत में जल संग्रहण का बहुत पुराना इतिहास है, यहाँ जल संग्रहण की एक मूल्यवान पारंपरिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपरा है, उदाहरण स्वरूप प्राचीन नदी, तालाब, जोहड़, कुओ के साक्ष्य देश के अलग–अलग हिस्सों में देखे जा सकते हैं। प्राचीन साहित्य में कई स्थानों पर वर्षा जल एवं उसकी भविष्यवाणी की चर्चा भी आती है। वैदिक साहित्य में जल स्रोतों जल के महत्व आदि गुणवत्ता एवं संरक्षण की बात कई स्थानों पर मिलती हैं। ऋग्वेद में सीता एक प्रकार का पवित्र दैविय नियम की चर्चा आती है जो आवश्यक वर्षा की उपलब्धता से संबंधित है। जल के औषधीय गुणों की चर्चा आयुर्वेद के अतिरिक्त ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में भी मिलती है। यह माना गया है कि हमारा शरीर पंच भूतों अर्थात् पंच तत्वों से मिलकर बना है जिसमें एक तत्व जल भी है। ऋगवेद का नदी सूक्त नदियों के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना का संदेश देता है। अथर्ववेद में कहा गया है कि यज्ञाग्नि से धूम बनता है, धूम से बादल बनते हैं एवं बादलों से वर्षा होती है। इसी प्रकार इंद्र व्रत आर्यन भी जल के महत्व एवं संरक्षण का इतिहास प्रस्तुत करता है। महान आर्यवेदाचार्य सुरपाल ने लिखा है कि दस कुएं एक तालाब के बराबर, दस तालाब एक झील के बराबर, दस झील एक पुत्र के बराबर, दस पुत्र एक पेड़ के बराबर हैं इसी प्रकार यजुर्वेद में वर्णन है कि

''यागो भौष घी हि ऊँ सीर्घाम्नोः''

''घाम्नो राजस्तो वरूण नो मुंच''

अर्थात् हे राजन आप अपने राज्य में स्थानों में जल संरक्षण और वनस्पतियों को हानि न पंहुचाओं इन सबको

संरक्षण करो जिससे हम सभी को जल एवं वनस्पतियां सत्त् रूप से प्राप्त होती रहे।

चौथी शताब्दी इसवी पूर्व में ऋषि पाराशर ने भी जल एवं वर्षा प्रणाली की व्याख्या की है, यहां तक कि वर्षा जल संग्रहण के लिए खेतों में छोटे–छोटे बांध बनाने की चर्चा भी की है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी जल प्रबंधन की विस्तृत चर्चा है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्षा जल मापन के लिए द्रोण नामक यंत्र की चर्चा मिलती है व जल की उपलब्धता के अनुसार कौटिल्य ने कृषि योग्य भूमि को दो भागों में विभाजित किया है। देवमात्रिका का वह क्षेत्र जो पूर्णतः वर्षा जल पर निर्भर हो एवं अदेवमात्रिका जिसके लिए जल के अन्य स्रोतों से वर्षा जल की उपलब्धता हो, इसके साथ ही कौटिल्य ने जल संग्रहण के लिए संदोहक सेतु एवं अदोहक सेतु बनाने का भी जिक्र अर्थशास्त्र में किया है। अर्थात् बांध बनाने व जल संरक्षण कार्यों में विशेष रुप से जनता की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की बात कौटिल्य ने अपने ग्रंथ में कई स्थानों पर की है। इसी प्रकार सुश्रुत संहिता का 45 वां अध्याय पेयजल पर है, जिसमें जल को दो प्रकार से विभाजित किया है, गंगा शुद्ध जल एवं समुद्र अशुद्ध जल, फिर गंगाजल को पुनः चार प्रकारों में विभक्त किया गया है धारा, करा, तोशार, इकट्ठा किया गया वर्षा जल।

प्राचीन काल में भारत में विभिन्न क्षेत्रों में जल संरक्षण एवं प्रबंधन की तकनीकें विकसित की गई थी जो उस समय के आवश्यकताओं के अनुरूप थी, जैसेः

- खुले स्थानों पर वर्षा जल संग्रहण की व्यवस्था की गई थी।
- बाढ़ वाले स्थानों पर जल संग्रहण।
- पहाड़ी एवं ढलान वाले क्षेत्रों में जल बहुत सारी धाराऐं उपलब्ध थी, वहां से एवं नदियों में से जल को नहरों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों तक पहुंचाया गया।
- जहां भूमिगत जल स्रोत उपलब्ध थे, वहां कुछ एवं अन्य व्यवस्थाएं की गई थी।

मौर्य काल में राहगीरों को शीतल जल उपलब्ध कराने के लिए रास्ते पर एक निश्चित दूरी पर जगह–जगह कुएं खुदवाने के साक्ष्य मिलते हैं। अशोक के मस्की शिलालेख में राहगीरों के लिए कुआं खुदवाने की आज्ञा दी गई है। उपरोक्त वर्णन के आधार पर यहां यह कहा जा सकता है कि प्राचीन साहित्य में वर्णित वर्षा के देवता वरुण को देवता का दर्जा इन साहित्यों में वर्णित जल की महत्ता को ध्यान में रखते हुए दिया गया है।

भारत के विभिन्न हिस्सों में सिद्धांत विभिन्न प्रकार के पारंपारिक जल संरक्षण संरचनाएः

1. क्षेत्रः हिमालय, संरचनाः सिंग, राज्यः लद्दाख जम्मू एण्ड कश्मीर, व्याख्याः बर्फ से एकत्रित करने के टेंक (पाषाण कालीन)
2. क्षेत्रः बलूचिस्तान एवं कच्छ, संरचनाः बाघ, राज्यः पाकिस्तान, व्याख्याः 3000 ईसा पूर्व के पत्थरों से बने बहाव।
3. क्षेत्रः सिंधु घाटी सभ्यता, संरचनाः कुएँ व तालाब, राज्यः पंजाब उत्तर प्रदेश। व्याख्याः 3000 से 1500 ई. पू. के जल संग्रहण हेतु।
4. क्षेत्रः कमाबेशपुर, संरचनाः टैंक, राज्यः उत्तर प्रदेश, व्याख्याः ईटों से बने टैंक प्रथम शताब्दी ई.पू.का।
5. क्षेत्रः गिरनार, संरचना–झील, राज्यः गुजरात, व्याख्याः सुदर्शन नामक झील अशोक कालीन।

उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य कई जल संरक्षण के महत्व को बताती हुए अनगिनत रचनाएं भारत के कोने–कोने में देखने को मिलती है जो हमें और हमारी आने वाली पीढ़ी को जल संरक्षण की आवश्यकता के प्रति सचेत करती है।

fu"d"k

उपर्युक्त विवेचना के अनुसार जल संरक्षण व उसके महत्त्व के विषय पर हमारे प्राचीन ग्रंथों ने समय–समय पर निर्देशक व मार्गदर्शक की भूमिका निभाई है, साथ ही हमारे प्राचीन राजवंशों ने भी इन निर्देशों का पालन करते हुए अपनी प्रजा व राहगीरों के लिए जल प्रबंधन की कई प्रतिमान स्थापित किए हैं जो आज भी भारत के कोने–कोने

में स्थित हैं। उदाहरण स्वरूप राजा नल की नगरी नरवर मे स्थित 20 बावरिया वा दतिया नगर में स्थित बुंदेला राजाओं की जल प्रबंधन व्यवस्था इस बात की ओर संकेत करती है कि तत्कालीन राजा आने वाले जल संकट के लिए गंभीर थे। वर्तमान समय में जल संकट ने इतना गंभीर रूप ले लिया है कि भारत के कई राज्य पीने के पानी के लिए तरस रहे हैं और आने वाले समय में यह स्थिति और विकराल रूप धारण कर सकती है। अतः हम सभी को चाहिए कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में वर्णित जल संरक्षण के प्रतिमानो को याद करते हुए वृक्षारोपण और जल प्रबंधन पर ध्यान दे तभी जल संकट की विशाल समस्या से लड़ा जा सकेगा और आने वाली हमारी पीढ़ी को जल और जंगल महत्व को समझाना होगा और जल संरक्षण पर बल देना होगा।

I inHk I ph

1. पाण्डेय जे.एस., ऋग्वेदिक समाज, ऋग्वेद, 11.11.2002।
2. श्रीवास्तव, के.सी., प्राचीन भारतीय इतिहास, पेज नंबर 57।
3. पाण्डेय जे.एन., सिंधु घाटी सभ्यता।
4. çkphu Hkkjrh; bfrgkl] >kj[k *श्रीयाली* पेज नंबर 102,108,109।
5. वैदिक कालीन सामाजिक संरचना पी.एच.डी. शोध कार्य पेज नंबर 201,202।

––==00==––